International Journal of Applied Research 2016; 2(4): 138-139

**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 5.2
IJAR 2016; 2(4): 138-139
www.allresearchjournal.com
Received: 22-02-2016
Accepted: 23-03-2016

**Rajnish Kumar Singh**
Department of History, SS Sinha College, Aurangabad, Bihar, India

**Correspondence**
**Rajnish Kumar Singh**
Department of History, SS Sinha College, Aurangabad, Bihar, India

# भारत विभाजन का उत्तरदायित्व

**Rajnish Kumar Singh**

**प्रस्तावना**

भारत का विभाजन एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना थी। गाँधी, कांग्रेस और राज तीनों ही भारत की अखंडता बनाए रखना चाहते थे परन्तु अंतत: बटवारा नही रूक सका। प्रश्न यह उठता है कि विभाजन के लिए उत्तरदायी कौन था? इस संदर्भ में विभिन्न विचार व्यक्त किये गये है। कुछ इतिहासकारों ने विभाजन के लिए गांधी, नेहरू, पटेल और जिन्ना को, तो कुछ ने अंग्रेजों को इसके लिए उत्तरदायी माना। इस विवादास्पद प्रश्न का सही उत्तर अब भी निश्चित नहीं किया जा सका है, परन्तु निश्पक्ष रूप से कहा जा सकता है कि भारत विभाजन के लिए राज, कांग्रेस और मुस्लिम लीग तीनों ही उत्तरदायी थे। समय-समय पर तीनों ने जो नीतियाँ अपनायी वे अंतत: विभाजन के लिए उत्तरदायी बनी। इस प्रक्रिया का आरम्भ राज ने ही किया।

मार्ले-मिन्टो सुधार योजना के अंतर्गत पहली बार मुसलमानों को राजनीतिक बढ़ावा देने, भारतीय राजनीति में साम्प्रदायिक तथ्यों को उभारने का प्रयास किया गया। 1921 ई. में जिन्ना मुस्लीम लीग से अलग हो गये एवं गांधी और कांग्रेस की नीतियों को संदेह की दृष्टि से देखने लगे। कांग्रेस की नीतियों एवं कार्यों ने इस दरार को बढ़ाने में सहयता पहुँचायी। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद विभाजन की मांग बढ़ने लगी। गांधी जी ने मुसलमानों को संतुष्ट कर तथा भारत की अखण्डता को बचाये रखते हुए 1940 के कांग्रेस के रामगढ़ अधिवेशन में बटवारे के सिद्धान्त को स्वीकार कर लिया और यह एक पारिवारिक विभाजन था। इसके पीछे गांधी की मंशा अंग्रेजों के प्रयासों को विफल करना था।

अंग्रेजों ने समय-समय पर अपनी नीतियों के माध्यम से विभाजन को कारगर बनाया। इसी क्रम में जिन्ना को कई तरह की प्रलोभन दिया गया जैसे लिनलिथगो प्रस्ताव में। इसी क्रम में सी. राजगोपालाचारी ने अपना फार्मूला सौपा जिसे जिन्ना ने अस्वीकार कर दिया लेकिन कालान्तर में यही भारत-विभाजन का आधार बना।

पाकिस्तान के निर्माण को सहज बनाने में नेहरू, पटेल और डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद भी कम उत्तरदायी नहीं थे। गांधी की सहमति लिये बिना ही तीनों ने मार्च, 1947 में जिन्ना के दो राष्ट्र सिद्धांत को स्वीकृत प्रदान कर पंजाब का हिन्दू एवं मुसलमान बहुल इलाकों में विभाजन करने का प्रस्ताव कांग्रेस कार्यकारणी समिति में रखा। कांग्रेस के इन महत्वपूर्ण नेताओं की मनोभावनाओं का अंदाजा लगाकर लार्ड माउण्टवेटन ने मई 1947 में विभाजिन की पूरी तैयारी कर ली। सरदार पटेल और जे॰ एल॰ नेहरू की भी इस पर स्वीकृति मिल गयी। बाद में गांधी जी काफी मशक्कत के बाद मान गये और इनका कहना था कि विभाजन को अब और टाला नहीं जा सकता। 3 जून 1947 को कांग्रेस कार्यकारणी समिति की बैठक में माउण्टवेटन योजना पर विचार किया गया। गांधी जी ने इस बैठक में विभाजन के प्रस्ताव को स्वीकृति दे दी। और अतंत: भारत का विभाजन हो गया और पाकिस्तान सदा के लिए भारत से अलग हो गया।

उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट हो जाता है कि भारत का विभाजन एक लम्बी प्रक्रिया का परिणाम था जिसमें समय-समय पर विभिन्न तत्वों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इसके लिए न तो राज, जिन्ना, कांग्रेस, गांधी, नेहरू या पटेल अथवा साम्प्रदायिकता की भावना ही अकेले उत्तरदायी थी बल्कि इन सभी ने चाहे अनचाने ढ़ंग से भारत विभाजन में सहयोग दिया। विभाजन के लिए सिर्फ जिन्ना अथवा नेहरू को ही उत्तरदायी ठहराना उचित नहीं है।

जिन्ना की नए राष्ट्र की लालसा और नेहरू पटेल द्वारा भारत को शीघ्र स्वाधीन कराने की प्रबल आकांक्षा ने अंततः 14–15 अगस्त, 1947 को पाकिस्तान एवं स्वतंत्र भारत का निर्माण कर दिया। विभाजन से संबंधित मत आज भी शोध का एक महत्वपूर्ण विषय बना हुआ है।

**Reference**

1. Bipin Chandra. Modern India.
2. Chandra B Tripathi. Freedom Struggli.
3. Sukla RL. The history of Modern India Summit sarkar.
4. Philips CH. Evolution of India and Pakistan 1858-1947.